खण्ड-324, अंक-1
शुक्रवार, 4 चैत्र, शक संवत् 1899
(25 मार्च, 1977 ई0)

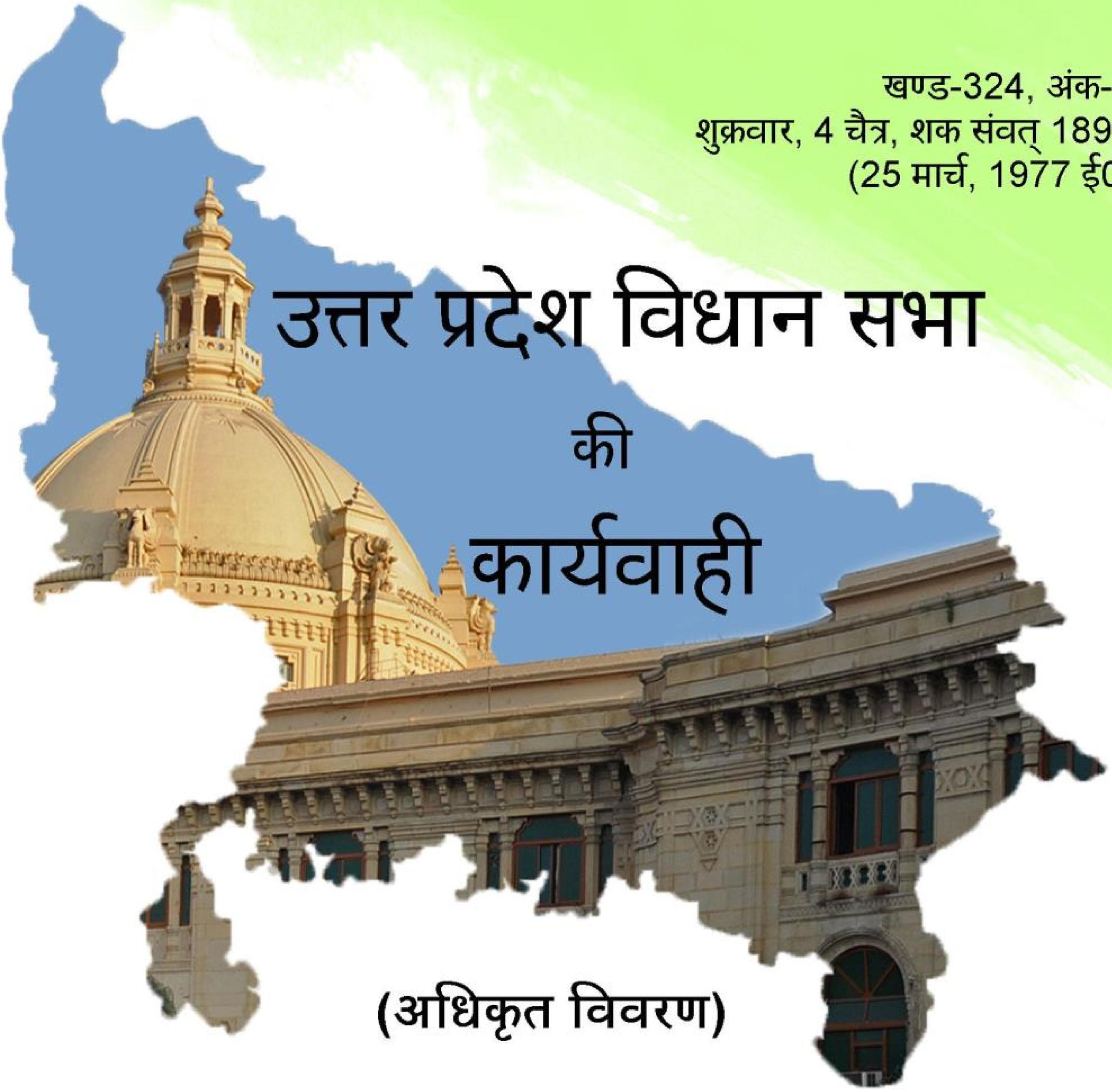

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 324 में 4 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1977

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

135090

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	1–5
श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री अध्यक्ष द्वारा आंशिक पाठ ..	5
"लोक पक्ष" का नाम "जनता पार्टी" रखने के सम्बन्ध में सूचना ..	6
कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा समय निर्धारण का प्रस्ताव (स्वीकृत) ..	6
कतिपय सदस्यों द्वारा दल परिवर्तन के सम्बन्ध में सूचना	7–8
राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री फखरुद्दीन अली अहमद के निधन पर शोकोद्गार ..	8–10
विधान सभा सदस्य श्री प्रेम सुन्दर नारायण सिंह के निधन पर शोकोद्गार ..	10
भूतपूर्व सदस्य श्री अजित प्रसाद जैन के निधन पर शोकोद्गार ..	10–12
भूतपूर्व सदस्य सर्वश्री विनय कुमार मुकर्जी, सुरेन्द्र बहादुर सिंह, चौधरी लायक सिंह, श्री जयेन्द्र सिंह, श्री मुरलीधर जायसवार तथा श्रीमती राजेन्द्र किशोरी के निधन पर शोकोद्गार	12–14
बजट साहित्य के वितरण-व्यवस्था के सम्बन्ध में सूचना	14
वित्तीय वर्ष 1976–77 के लिए द्वितीय अनपूरक अनुदान (प्रस्तुत किया गया)	14
वित्तीय वर्ष 1977–78 का आय-व्ययक (प्रस्तुत किया गया) ..	14–15
वित्तीय वर्ष 1977–78 के एक भाग के लिए लेखानुदान (प्रस्तुत किया गया)	16
नत्थियां	17–19

उत्तर प्रदेश विधान सभा

135090

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, 25 मार्च, 1977

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 12 बजकर 30 मिनट पर दिन अध्यक्ष, श्री बासुदेव सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य—392

अंगने लाल, श्री
अजीजुर्रहमान, श्री
अजीत प्रताप सिंह, श्री
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार जमील, श्री (एडवोकेट) उर्फ जिमी मियां
अनवार मोहम्मद, श्री
अनिरुद्ध राय, श्री
अबुल फैज शाह, श्री
अब्दुल बाकी, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल रहमान खां 'नशतर', श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
अवधेश कुमार, श्री
अवेद्य नाथ, श्री
आगा जैदी, श्री
आनन्द स्वरूप यादव, श्री (एडवोकेट),
आबिद अली, श्री
आशा राम यादव, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
इन्द्रमोहनी, श्रीमती
ईश्वरी सिंह, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए0 सी0 ग्राइस, श्री
ओम प्रकाश, श्री
ओम प्रकाश गुप्त, श्री
ओम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री
ओम प्रकाश सिंह, श्री
कन्हैया लाल सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काजी जलील अब्बासी, श्री
का0 मु0 मुहीउद्दीन, श्री
काली चरण यादव, श्री
काशी नाथ मिश्र, श्री
काशी नाथ मेहरोत्रा, श्री
काशी प्रसाद, श्री
किशन लाल, श्री
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री
कुलतार सिंह, सरदार
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण दत्त, श्री (उर्फ बालराज)
कृष्णवीर सिंह, श्री
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
कृष्णा राय, श्री
केदार नाथ अग्रवाल, श्री
केशरी लाल, श्री
कैलाश पति, श्रीमती
कैलाश सिंह, श्री
क्रान्ति कुमार, श्री
खचेड़ू सिंह मोहरिया, श्री
खूब चन्द, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा देवी विशारद, श्रीमती
गंगा प्रसाद लोधी, श्री
गंगा सिंह, श्री
गंगा स्वरूप, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गजेंद्र सिंह, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गया सिंह, श्री

गिरिजा किशोर मिश्र, श्री
गिरिजा शंकर पाठक, श्री
गुलाब चन्द, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोपी नाथ कामेश्वरपुरी, श्री
गोरे लाल शाक्य, श्री
गोविन्द प्रसाद गैरोला, श्री
गोविन्द सिंह नेगी, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री
गौरी शंकर, श्री (एडवोकेट)
चन्दन सिंह, कामरेड
चन्दन सिंह, श्री
चन्द्र नारायण सिंह, श्री
चन्द्र भान आजाद, श्री
चन्द्र शेखर, श्री
चन्द्र शेखर सिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरण सिंह, डाक्टर
चरन दास सेठ, श्री
चितरंजन स्वरूप, श्री
चेतराम गंगवार, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा लाल चौधरी, श्री
जग बहादुर, श्री (अतरौलिया, जिला आजमगढ़)
जग बहादुर, श्री (मेहनगर, जिला आजमगढ़)
जग बहादुर वर्मा, श्री
जग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदीश अवस्थी, श्री
जगदीश नरायन त्रिपाठी, श्री
जगदीश मिश्र, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जफर आजमी, श्री
जमुना प्रसाद बोस, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराज गौतम, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डाक्टर
जुगल किशोर यादव, श्री
ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री
झाम लाल अहिरवार, श्री
झिलमिट, श्री
तीरथ राम कोहली, श्री
तेज नारायन त्रिवेदी, श्री
तेज बहादुर, श्री
तेज सिंह, श्री
त्रिवेणी सहाय, श्री
त्रिवेनी, श्री
दधीच सिंह, श्री
दया राम भास्कर, श्री
दलसिंह यादव, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दिनेश चन्द्र रस्तोगी, श्री
दीना नाथ सेवक, श्री
दीपनारायण पाण्डेय, श्री
दीपनारायण बन महन्थ, श्री
दुर्योधन, श्री
दुलारा देवी, श्रीमती
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
देवी सिंह, श्री
धरम राम, श्री
धर्म चन्द्र मिश्र, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री
धर्मपाल सिंह, डाक्टर
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धर्म सिंह, श्री
धीरेन्द्र सहाय, श्री
ध्रुव नारायण सिंह, श्री
नजीर अहमद, श्री
नजुराम, श्री
नत्थू सिंह यादव, श्री
नन्द राम, श्री
नन्हे लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथू राम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण दास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नारायण हरी शर्मा, श्री
नियाज हसन खां, श्री
निसार अहमद अन्सारी, श्री
पुरुषोत्तम कौशिक, श्री
पुरुषोत्तम दास, चौधरी
पुरूषोत्तम लाल बधवार, श्री (उर्फ राजा जी)
पूरन चन्द, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारे लाल, श्री (जिला अलीगढ़)

प्यारे लाल, श्री
प्यारे लाल वर्मा, श्री
प्रकाश नारायण गुप्ता, डाक्टर
प्रताप नारायण, श्री
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभु नारायण, श्री
प्रभु दयाल, श्री
प्रियदर्शी जेटली, श्री
प्रेम दत्त, श्री
फजलुर्रहमान अन्सारी, श्री
फरजन्द अली बेग, श्री
बंशीधर, श्री
बच्चा पाठक, श्री
बनवारी राम यादव, श्री
बलवीर सिंह यादव, श्री
बल्देव, श्री
बांकेलाल, श्री
बादाम सिंह, श्री
बाबू लाल तिवारी, श्री
बाबूलाल वर्मा, श्री
बाबू सिंह यादव, श्री
बाल कृष्ण सनवाल, श्री
बृजपाल सिंह यादव, श्री
बेचन राम, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
बैजनाथ यादव, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण निर्मोही, श्री
भगवती प्रसाद सिंह, श्री
भगवती सिंह विशारद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद शुक्ल, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भारत सिंह चौहान, श्री
भीषम, श्री
भूपसिंह केन, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भोला दत्त सकलानी, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मनीराम, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शन्नू खां)
मन्ना लाल, श्री
मन्नी लाल, श्री
मन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मलखान सिंह, डाक्टर
मलखान सिंह सैनी, श्री
मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां, श्री
महाबीर प्रसाद, श्री
महेन्द्र रिपुदमन सिंह, राजा
महेश सिंह, श्री
माखन लाल मिश्र, श्री
माता प्रसाद, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मानबहादुर सिंह, श्री
मिस्त्रयार खां, श्री
मुन्शी लाल, श्री
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुहम्मद असरार अहमद ,श्री
मुहम्मद मसूद खां, श्री
मुहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री
मूल चन्द्र राजपूत, श्री
मेघ नाथ सिंह शिशोदिया, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
मोहन सिंह, श्री
मोहम्मद अयूब सिद्दीकी, श्री
मोहम्मद असलम, हाफिज
मोहम्मद महमूद अली खां, श्री
मोहम्मद रफी खां, श्री
मोहम्मद शकील अहमद, श्री
मोहम्मद हयात, हाजी
मोहसिना किदवाई, श्रीमती
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ लल्लन जी)
रघुनाथ, श्री
रघुनाथ सिंह, श्री
रघुबीर, श्री
रघुबीर सिंह, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला गोंडा)
रघुराज सिंह, श्री (जिला देवरिया)
रणंजय सिंह, राजा
रणजीत सिंह जूदेव, श्री
रणधीर सिंह, श्री
रफीउल्ला, श्री
रमा पन्त, कुमारी

रमाकान्त द्विवेदी, श्री
रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राजपाल, श्री
राजबहादुर, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राज मंगल पाडेय, श्री
राजेन्द्र कुमार गर्ग, श्री
राजेन्द्र कुमारी बजापेयी, डाक्टर
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद दौनेरिया, श्री
राजेन्द्र शाह, श्री
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राधा चरण सिंह, ठाकुर
राम अधार, श्री
राम औतार सिंह भदौरिया, श्री
रामगरीब, कैप्टेन
रामचन्द्र बक्श सिंह, श्री
राम चरन शाह, श्री
राम जनम राय, श्री
रामजी सिंह, श्री
रामजी लाल केन, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
राम दयाल सिंह, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव, श्री
रामदेव यादव, श्री
रामनाथ, बाबा
राम नारायण पाठक, श्री
राम निहोर, श्री
राम पति, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
राम पाल सिंह, श्री
राम पाल सिंह यादव, चौधरी
रामपूजन पटेल, श्री
राम प्यारे तिवारी, श्री
राम प्रकाश यादव, श्री
राम बाबू मिश्र, श्री
राम रतन सिंह, श्री
राम रति बिन्द, श्री एडवोकेट
रामरती देवी, श्रीमती
रामरेखा यादव, श्री
राम लखन, श्री (जिला इटावा)
राम लखन, श्री (जिला बस्ती)
रामशिरोमणि दुबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
रामसमुझ तिवारी, श्री
रामसुन्दर पाण्डेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
राम हर्ष चौधरी, श्री
रामायण राय, श्री
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री
राव मुश्ताक, श्री
रुद्र प्रसाद, श्री
रूपराम, श्री
रेवती रमण सिंह, श्री (उपनाम मणी जी)
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्ष्मण सिंह, श्री
लक्ष्मी नारायण पांडेय, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लटूरी सिंह, श्री
लालन शर्मा, श्री
लालू राम, श्री
लोकपति, श्री
विजय कुमार, श्री
विजयपाल सिंह, श्री
विद्याधर, श्री
विमल प्रसाद तिवारी, श्री
विश्राम, श्री
वीर बहादुर सिंह, श्री
वीर सिंह सेंगर, श्री
वीरेन्द्र कुमार, चौधरी
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेन्द्र स्वरूप, श्री
वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर, श्री
वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शतरुद्ध प्रकाश, श्री
शफीकुर्रहमान बर्क, श्री
शान्ति प्रपन्न शर्मा, श्री
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिव कुमार पाण्डेय, श्री
शिव कैलाश, श्री
शिवचरन लाल, श्री

शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर
शिवपाल सिंह, श्री
शिव प्रसाद, श्री
शिव प्रसाद गुप्त, श्री
शिव लाल, श्री
शिव शंकर सिंह, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्यामकिशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम मिश्रा, श्री
श्याम लाल रावत, श्री
श्यामा देवी शर्मा, श्रीमती
श्रीनारायण, श्री (उर्फ भुलई भाई)
श्रीपाल सिंह, कुंवर
श्रीशचन्द्र, श्री
सच्चिदानन्द बाजपेयी, श्री
सत्तार अहमद, श्री
सत्यपाल मलिक, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्य प्रकाश मालवीय, श्री
सत्यवीर सिंह, श्री
सन्त सिंह यूसुफ, श्री
सन्तोष कुमारी पाठक, श्रीमती
सरस्वती टम्टा, श्रीमती
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री
सालहउद्दीन उस्मानी, श्री (उर्फ नब्बन)
सीताराम निषाद, श्री
सुक्खन सिंह, श्री
सुखदा मिश्रा, श्रीमती
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल कुरील, श्री
सुरेन्द्र प्रताप नारायन, श्री
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री
सुल्तान सिंह यादव, श्री
सूबेदार प्रसाद, श्री
सैयद मुर्तजा अली खां, नवाब
सोहन लाल, श्री
सोहन लाल घुसिया, श्री
सोहन लाल लाठ, श्री
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरिकेवल, श्री
हरिराम, श्री
हरीश कुमार गंगवार, श्री
हरीश चन्द्र खंडलवाल, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकमसिंह, श्री
हुबराज, श्री
हेमराज, श्री

श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री अध्यक्ष द्वारा आंशिक पाठ

श्री अध्यक्ष—

माननीय सदस्यगण, आप हमारे आदरणीय राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद के दुखद निधन से हुई महान क्षति के बाद पहली बार एकत्रित हो रहे हैं। श्री फखरुद्दीन अली अहमद साहब एक सच्चे देशभक्त थे, और वास्तव में वह हमारी मिश्रित संस्कृति एवं धार्मिक सहिष्णुता व धर्मनिरपेक्षता के आदर्शों के प्रतीक थे। मैं उनकी स्मृति के प्रति अपनी सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

माननीय सदस्यगण, मुझे विश्वास है कि अपने विचार विमर्श में आप इस महान प्रदेश की तथा इस विधान मण्डल की परम्पराओं के अनुसार सौहार्द्र, सहनशीलता एवं पारस्परिक आदर की भावना को दिग्दर्शित करते रहेंगे। इन शब्दों के साथ में आपको अपने कर्तव्यों का सच्ची प्रजातांत्रिक भावना के साथ निर्वहन करने का आह्वान करता हूं,

(जयहिन्द)

(श्री राज्यपाल के अभिभाषण के लिए देखिए नत्थी 'क' आगे पृष्ठ 17–19 पर।)

"लोक पक्ष" का नाम "जनता पार्टी" रखने के सम्बन्ध में सूचना

श्री अध्यक्ष—

मुझे आपको सूचित करना है कि इस सदन में लोकपक्ष के नाम से काम करने वाले दल में अपना नाम बदल कर "जनता पार्टी" विधान मंडल उत्तर प्रदेश कर दिया है। यह दल देश में है और चुनाव भी इस नाम से लड़ा गया है, अतएव इस वास्तविकता को मैं स्वीकार करता हूं।

कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा समय-निर्धारण का प्रस्ताव

श्री अध्यक्ष—

कार्य-मंत्रणा समिति ने अपनी 24 मार्च, 1977 की बैठक में यह सिफारिश की है कि सदन के 25 मार्च, 1977 से 31 मार्च, 1977 तक के उपवेशनों में निम्नलिखित कार्य क्रम रखा जाय :—

शुक्रवार, 25 मार्च, 1977 (12.30 बजे अपराह्न)

श्री राज्यपाल के अभिभाषण को पढ़कर सुनाया जाना, कार्य-मंत्रणा समिति की सूचना एवं निधन के निर्देश।

5 बजे अपराह्न—

वित्तीय वर्ष 1976–77 के द्वितीय अनुपूरक अनुदानों तथा वित्तीय वर्ष 1977–78 के आय–व्ययक के प्रस्तुतीकरण के उपरान्त वित्तीय वर्ष 1977–78 के एक भाग के लिये लेखानुदान का प्रस्तुतीकरण।

शनिवार, 26 मार्च, 1977 (11 बजे पूर्वाह्न से 1 बजे अपराह्न तक)—

(1) औपचारिक कार्य जैसे अध्यादेशों, विज्ञप्तियों एवं नियमों आदि का सदन के पटल पर रखा जाना आदि।

(2) वित्तीय वर्ष 1976–77 के वित्तीय अनुपूरक अनुदानों पर सामान्य चर्चा, मांगों पर मतदान तथा तत्सम्बन्धी विनियोग विधेयक का पुरःस्थापन, उस पर विचार एवं उसका पारण।

(3) लेखानुदान के प्रस्ताव पर विचार, मांगों पर मतदान तथा तत्सम्बन्धी विनियोग विधेयक का पुरःस्थापन, उस पर विचार एवं उसका पारण।

रविवार, 27 मार्च, 1977, सोमवार, 28 मार्च, 1977 तथा मंगलवार, 29 मार्च, 1977 को बैठक नहीं होगी।

बुधवार, 30 मार्च, 1977 एवं गुरुवार, 31 मार्च, 1977।

श्री राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा।

संसदीय कार्य-मंत्री (श्री अम्मार रिजवी)—

मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा की गयी सिफारिश, जिसकी सूचना श्री अध्यक्ष द्वारा आज सदन को दी गयी है, सहमत है।

श्री अध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि यह सदन कार्य–मंत्रणा समिति द्वारा की गयी सिफारिश, जिसकी सूचना अध्यक्ष द्वारा आज सदन में दी गयी है, सहमत है।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

कतिपय सदस्यों द्वारा दल परिवर्तन के सम्बन्ध में सूचना

श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी गढ़वाल)—

श्रीमन्, यह सूचना चाहिये थी कि सदन में विभिन्न दलों की स्थिति क्या है ?

श्री अध्यक्ष—

इसकी प्रति आपको बांटी गयी है। मुझे सदन को यह सूचित करना है कि गत अधिवेशन के पश्चात् विधान सभा के निम्नलिखित माननीय सदस्यों ने निम्न प्रकार से अपने दल परिवर्तन की सूचना दी है :—

सदस्य का नाम	जिला	दल जिसे छोड़ा	दल जिसमें सम्मिलित हुए
1—श्री सत्यवीर सिंह	बुलन्दशहर	निर्दल	लोकपक्ष
2—श्री मोहम्मद असरार अहमद	बदायूं	लोकपक्ष	निर्दल

श्री अध्यक्ष—

सदस्य का नाम	जिला	दल जिसे छोड़ा	दल जिसमें सम्मिलित हुये
3—श्री सत्य पाल मलिक	मेरठ	लोकपक्ष	निर्दल
4—श्री चन्दन सिंह	मथुरा	लोकपक्ष	निर्दल
5—श्री बृजपाल सिंह यादव	बदायूं	निर्दल	कांग्रेस (शासन)
6—श्री हरिश्चन्द्र खण्डेलवाल	पीलीभीत	,,	,,
7—श्री चन्दन सिंह ..	मथुरा	,,	,,
8—श्री मोहम्मद असरार अहमद	बदायूं	,,	,,
9—श्री श्रीपाल सिंह ..	सुल्तानपुर	,,	,,
10—श्री धर्मपाल सिंह ..	फर्रुखाबाद	,,	,,
11—श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा	बांदा	,,	,,
12—श्री सत्य पाल सिंह यादव।	शाहजहांपुर	,,	,,
13—श्री शिवचरन लाल	आगरा	,,	,,
14—श्री सोहन लाल ..	बदायूं	लोकपक्ष	,,
15—श्री पूरन लाल ..	हरदोई	,,	,,
16—श्री रामेश्वर नाथ चौबे	बरेली	,,	,,
17—श्री चौधरी राम पाल सिंह यादव	कानपुर	सोशलिस्ट पार्टी	,,
18—श्री नियाज हसन खां	प्रतापगढ़	लोकपक्ष	,,
19—श्री शिवपाल सिंह	उन्नाव	निर्दल	,,

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

हमारे देश के प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने यह कहा है कि 22 तारीख तक दल बदल होगा और 22 तारीख के बाद कोई दल बदल नहीं होगा और जो लोग दल बदल करेंगे, उनके खिलाफ कानून बनेगा या उनसे कहा जायगा कि वे इस्तीफा देकर फिर से चुनाव लड़े।

एक सदस्य—(श्री ऊदल से)

मान्यवर, आपकी क्या इच्छा है ?

(शोर)

श्री ऊदल—

यह जो लोग चिल्ला रहे हैं इस बात को सुनना नहीं चाहते हैं । आपकी क्या राय है इस बारे में ?

एक सदस्य—

यह स्वयं दल बदल करना चाहते हैं ।

श्री अध्यक्ष—

अभी दल परिवर्तन के संबंध में कोई अधिनियम नहीं बना है और मुझे पता नहीं है कि प्रधान मंत्री जी ने क्या कहा किन्तु केन्द्रीय शासन अगर कोई कानून बनायेगा तो देखा जायेगा ।

राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री फखरुद्दीन अली अहमद के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

मुझे अत्यन्त खेद के साथ इस सदन को सूचित करना पड़ता है, हम सब अवगत भी हैं कि हमारे महामान्य भारतीय गणराज्य के 5वें राष्ट्रपति परम श्रद्धेय श्री फखरुद्दीन अली अहमद का निधन 11 फरवरी, 1977 को प्रातःकाल हृदयगति के रुक जाने के कारण हुआ । श्रीमन्, माननीय श्री अहमद हमारे देश की वह विभूति थे जिन्होंने अपनी कर्त्तव्य परायणता, अपने व्यक्तित्व, व्यवहार एवं अपनी निष्ठा और परम राष्ट्रवादिता से सारे देश की जनता को अनुप्रेरित किया । श्रीमन्, श्री फखरुद्दीन जी एक आदर्श इंसान थे और उनकी सौम्यता उनके व्यक्तित्व की गम्भीरता, उनकी वाणी की मधुरता, इतनी प्रेरणादायक थी कि हम जैसे लोग जब कभी उनसे मिलते थे, तो, किसी प्रकाश स्तम्भ की तरह किसी भी परिस्थिति में कोई भी सलाह उनसे लेना हो, वह देश के बड़े बुजुर्ग के नाते हमें सलाह भी देते थे । श्रीमन्, श्री अहमद एक प्रखर राष्ट्रवादी थे । उन्होंने जिस प्रकार से शुरू में आसाम में राजनीति में पदार्पण किया और जब कि आसाम में साम्प्रदायिकता का भूत सवार था उससे जिस प्रकार उन्होंने संघर्ष किया आसाम में उसकी एक अपनी कहानी है । आसाम सरकार में भी जो उन्होंने योगदान दिया, आसाम के निर्माण में जो योगदान दिया वह चिरस्मरणीय रहेगा । आसाम के एडवोकेट जनरल के रूप में उन्होंने ख्याति प्राप्त की । जब से केन्द्रीय पार्लियामेंट में वह आये उनका एक विशेष योगदान रहा और भारत सरकार के विभिन्न पदों को सुशोभित कर उन्होंने देश के निर्माण में पूरा योगदान दिया । भारत सरकार में खाद्य मंत्री के पद पर रह कर उन्होंने उत्तर प्रदेश के विकास में बहुत दिलचस्पी ली और प्रदेश में जो 27 नई चीनी मिलें बन रही हैं उसका श्रेय उन्हीं को है ।

एक उदाहरण देना चाहता हूं कि स्वर्गीय श्री फखरुद्दीन अली साहब से व्यक्तिगत रूप से जो लोग सहमत नहीं थे उन्होंने भी बाद में यह स्वीकार किया कि उन्होंने राष्ट्रपति पद की गरिमा बढ़ाई । विभिन्न विदेश यात्राओं के माध्यम से भारत की जो अन्तर्राष्ट्रीय एवं मानवता की नीति रही उसका उन्होंने प्रतिपादन किया । राष्ट्रपति का पद संभालने के बाद उत्तर प्रदेश का कई बार विभिन्न अंचलों में उन्होंने दौरा किया । उन्होंने अच्छा स्वास्थ्य न होते हुए भी उत्तर प्रदेश के लिये समय निकाला, चाहे वहां के सांस्कृतिक कार्यक्रम हों, चाहे भाषाई प्रश्न हों और हर प्रकार से उनके समाधान का उन्होंने प्रयत्न किया । निधन से ठीक पूर्व भी वह देश की विदेश नीति को प्रतिपादित करने हेतु विदेश यात्रा पर गये हुए थे । मलेशिया वगैरह । लेकिन भगवान को मंजूर नहीं था कि वह हमारे बीच में रहें ।

एक स्मारक स्वरूप हमारी सरकार का प्रयत्न है उसके लिये हमने श्री फखरुद्दीन अली साहब फंड का निर्माण किया है और 5 लाख रुपया उसके लिये दिया है । देश के लिये

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

जो कार्य उन्होंने किये हैं वह चिरस्मरणीय रहेंगे और उनका सबसे अच्छा स्मारक यही रहेगा कि जो उनमें प्रजातांत्रिक गुण निहित थे व्यक्तिगत जीवन में हम उनसे प्रेरणा लें और यही उनके प्रति हमारी सबसे अच्छी श्रद्धांजलि रहेगी। इन शब्दों के साथ मैं आग्रह करूंगा कि यह सदन और कांग्रेस दल की ओर से आप शोक समवेदना का प्रस्ताव उनके शोक संतप्त परिवार और श्रीमती बेगम आबिदा तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, 11 फरवरी, 1977 को अकस्मात राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली साहब का देहावसान हो गया। वह इस देश के राष्ट्रव्यापी नेता थे। वह आसाम विधान सभा के सदस्य रहे। वह देश की राज्य सभा व लोक सभा के सदस्य भी रहे। यही नहीं वह आसाम के मंत्रिमंडल में भी सम्मिलित हुए और जैसा माननीय मुख्य मंत्री ने बतलाया केन्द्रीय मंत्रि परिषद् में कई पदों को उन्होंने संभाला। सन् 1940 में सत्याग्रह करते हुए वह जेल गये और एक साल की सजा उनको दी गयी। जैसे ही 1941 में उनको जेल से रिहा किया गया सुरक्षा कानून में उनको पुनः गिरफ्तार कर लिया गया और फिर 1945 में उनको रिहा किया गया। इस तरह से श्री फखरुद्दीन अली साहब प्रथम पंक्ति के स्वतंत्रता सेनानी थे और उनसे हमको प्रेरणा लेनी चाहिये। देश के लिये वह आदर्श थ। राष्ट्रपति के रूप में जब वह विदेश यात्रा पर गये तो भारत के पक्ष को उन्होंने वहां बहुत ही भलीभांति रखा। इन शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति के परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि जो कुछ भी माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा है उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं और आपसे प्रार्थना है कि आप हमारी इस समवेदना को उनके परिवार वालों तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी गढ़वाल)—

मान्यवर, स्वर्गीय श्री फखरुद्दीन अली अहमद हमारे देश के उन नेताओं में से थे जिन्होंने आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लिया। जिस पद पर भी श्री अहमद रहे उन्होंने उसकी गरिमा को आगे बढ़ाया और देश और विदेश के अन्दर इस देश को ऊंचा किया। उनके निधन से हमारे दल को बहुत दुख है। आपसे प्राथना है कि आप मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से स्वर्गीय श्री अहमद के परिवार वालों को सांत्वना के शब्द पहुचाने की कृपा करें।

*बाबा रामनाथ (जिला मैनपुरी)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री फखरुद्दीन अली अहमद एक अच्छे विधि-वेत्ता, एक अच्छे प्रशासक और महान राष्ट्रभक्तों में से थे। उनके निधन से राष्ट्र ने एक अच्छे राष्ट्र-भक्त को खोया है। उनके निधन से समूचा भारतवर्ष दुखी ही नहीं है बल्कि सभी को व्यक्तिगत आघात भी पहुंचा है। मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से समवेदना प्रकट करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप उनकी पत्नी श्रीमती आबिदा बेगम को हमारी समवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, जनता पक्ष के माननीय सत्य प्रकाश जी, कम्युनिस्ट पार्टी के श्री गोविन्द सिंह नेगी जी तथा मार्क्सिस्ट पार्टी के बाबा रामनाथ जी ने जो स्वर्गीय राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद के प्रति अपने शोकोदगार अभिव्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और सम्पूर्ण सदन को सम्बद्ध करता हूं। स्वर्गीय राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद इस देश के संघर्षशील जीवन के अभिन्न अंग थे। वे भारतीय संस्कृति के सामाजिक रूप से सबसे बड़े प्रतीक थ। उनके निधन से सार्वजनिक क्षेत्र में और हमारे देश के राष्ट्रीय जीवन म एक बहुत बड़ी रिक्तता आयी ह जो अपूरणीय है। हम सब उनके निधन से शोक संतप्त ह। श्रीमती बेगम आबिदा और उनके परिवार के अकथनीय शोक संतप्तता से हम सब दुखी हैं।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री अध्यक्ष—]
माननीय नेताओं ने जो अपेक्षा मुझसे की है, मैं आपके शोकोद्गार को शोक संतप्त परिवार तक निश्चय ही भेजवा दूंगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह दिवंगत आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करे।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुये।)

विधान सभा सदस्य श्री प्रेम सुन्दर नारायण सिंह के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

मान्यवर, मुझे अत्यंत खेद के साथ इस सदन को सूचित करना पड़ता है कि इस विधान सभा के सम्मानित सदस्य श्री प्रेम सुन्दर नारायण सिंह जी हमारे बीच नहीं रहे। 6 जनवरी, 77 को हमारे बलरामपुर अस्पताल में उनका आकस्मिक निधन हो गया। श्रीमन्, वह केवल 48 वर्ष के थे। उनके आकस्मिक निधन से इस सदन को मैं समझता हूं कि बड़ी क्षति पहुंची है। श्रीमन्, प्रेम सुन्दर नारायण सिंह जी सर्वप्रथम 1962 में हापुड़ से निर्वाचित हुए फिर दुबारा 1968 में विधान परिषद् के लिये चुने गये। फिर तिवारा खरखोड़ा चुनाव क्षेत्र से विधान सभा के सदस्य चुने गये। मेरठ जिले के विकास में उनका बड़ा योगदान रहा। वह अपने तमाम अंचल में प्रभावशाली व्यक्तियों में से थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी विशेष रुचि थी इस सदन में जिनका भी उनसे सम्पर्क रहा उनकी गंभीरता से, उनकी व्यावहारिकता से और उनके स्वाभाव से सभी प्रभावित रहे। श्रीमन्, मेरा आपसे आग्रह है कि आप कृपया उनके शोक संतप्त परिवार तक इस सदन की हार्दिकतम समवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)—

श्रीमन्, स्वर्गीय प्रेम सुन्दर नारायण सिंह जी इस सदन के दो बार सदस्य चुने गये थे और एक बार स्थानीय निकाय चुनाव क्षेत्र से विधान परिषद् के सदस्य रहे। उनके साथ 3 साल तक मेरा साथ रहा। वे अत्यन्त मृदुभाषी थे और राजनीतिक और सामाजिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी लेते थे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी, वह बड़ी रुचि लिया करते थे। उनके निधन से इस देश की राजनीति को भारी क्षति पहुंची है जिसका पूरा होना सम्भव नहीं है। इन शब्दों के साथ मैं शोक संतप्त परिवार के लिये आपसे अनुरोध करता हूं कि हम लोगों की भावनाएं पहुंचाई जायं।

*श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी गढ़वाल)—

श्रीमन, मैं स्वर्गीय श्री प्रेम सुन्दर नारायण सिंह जी के संबंध में जो भावनायें माननीय नेता सदन और माननीय सदस्य जनता पार्टी ने व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और हमारी समवेदना भी उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

श्री अध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, माननीय नेता जनता पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी ने श्री प्रेम सुन्दर नारायण सिंह के आकस्मिक और दुर्भाग्यपूर्ण देहावसान पर जो भाव और शोकोद्गार व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और सदन को सम्बद्ध करता हूं और निश्चय ही उनके परिवार को शोक समवेदना पहुंचा दी जायगी। आपसे निवेदन है कि दो मिनट खड़े होकर शोक प्रस्ताव पारित करें।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

भूतपूर्व सदस्य श्री अजित प्रसाद जैन के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

श्रीमन्, मुझे इस सदन को बताते हुए अत्यंत खेद है कि सदन के पुराने सम्मानित सदस्य, देश के कर्मठ नेता और भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री माननीय अजित प्रसाद जी जैन का निधन 2 जनवरी, 1977 को दिल्ली में अपने निवास स्थान पर हुआ। श्रीमन्, श्री अजित प्रसाद जैन इस प्रदेश और देश की मानी जानी हस्तियों में से थे।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

हम लोग उनका नाम उनके विद्यार्थी जीवन से ही सुना करते थे। वह पहली बार सन् 1937 में इस विधान सभा के सदस्य चुने गये और तभी से पन्त जी के मंत्रि-मंडल में एक सफल पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी के रूप में काम किया और संविधान सभा के लिये भी यहां से वह सदस्य चुने गये। 1950 में वह केन्द्रीय मंत्रिमंडल में सम्मिलित हुए और उन्होंने पुनर्वास मंत्रालय और खाद्य मंत्रालय आदि विभागों को सफलतापूर्वक संभालकर चलाया। उस समय जब देश विभाजन की विभीषिकाओं से गुजर रहा था, उन्होंने करोड़ों शरणार्थियों की समस्या का हल निकालने में, उनकी खाद्य और पुनर्वास की समस्याओं का हल निकालने में अभूतपूर्व योगदान दिया। श्रीमन्, तत्पश्चात् फिर सहारनपुर से सन् 57 में लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए और उन्होंने एक अभूतपूर्व सफलता यह दिखाई कि वह उत्तर प्रदेश के निवासी होते हुए भी कर्नाटक प्रदेश के तुमकुर क्षेत्र से लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करके दिखाई। वह उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के भी एक अर्से तक अध्यक्ष रहे और उन्होंने संगठन कार्यों के माध्यम से भी कांग्रेस दल की महान सेवा की। केरल प्रदेश के गवर्नर के रूप में भी उन्होंने जो शासन में सुधार किया वे आज भी केरल में याद रखे जाते हैं। जब मैं केरल गया था तो मैंने पाया कि अल्पकाल में उनके द्वारा किये गये कार्यों से वहां की जनता बहुत प्रभावित थी। वह यहां सिंचाई आयोग के अध्यक्ष रहे और उत्तर प्रदेश पुलिस कमीशन के भी अध्यक्ष रहे। पुलिस प्रशासन में आज भी जो सुधार चल रहे हैं, वे उनके आयोग—पुलिस कमीशन की देन हैं। वह हमारे प्रदेश की महान हस्तियों में से थे। वह हमारे बीच में आज नहीं हैं। उनका जीवन प्रेरणा दायक और अनुशासित रहा है। वह अपने सार्वजनिक जीवन में थोड़ा सख्त भी थे। उन्होंने जो मानदण्ड स्थापित कर दिये, उनसे कभी भी, किन्हीं परिस्थितियों में विचलित नहीं हुए, चाहे शासन में रहे हों या नहीं। श्रीमन्, आज एक ऐसे महान् व्यक्ति हमारे बीच में नहीं हैं। मेरा आपसे आग्रह है कि आप उनके शोक-संतप्त परिवार वालों को हमारी हार्दिक समवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)—

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय श्री अजित प्रसाद जैन इस देश के एक उच्च कोटि के नेता थे। इस प्रदेश के वह निवासी थे। इस सम्मानित सदन के वह सदस्य भी रह चुके थे और कुछ समय तक सभा सचिव का पद भी सुशोभित किया और बाद में राज्य सभा और लोक सभा के भी सदस्य रहे। जैसा माननीय मुख्य मंत्री ने कहा एक बार कांग्रेस पार्टी से उन्हें लोक सभा का टिकट दे कर उत्तर प्रदेश के बाहर से भी चुनवाया। इस तरह से वह इस देश की राष्ट्रीय एकता के प्रतीक थे। उनका इस देश की राजनीति में बड़ा योगदान रहा है। जो कुछ इस संबंध में माननीय मुख्य मंत्री ने कहा है, उससे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करते हुए आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी भावनाएं उनके परिवार तक आप पहुंचा दें।

*श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी गढ़वाल)—

अध्यक्ष महोदय, माननीय अजित प्रसाद जी जैन स्वतन्त्रता संग्राम के बड़े अग्रणी लड़ाकुओं में से रहे हैं। वह मेरे जिले के पड़ोस के रहने वाले थे और हम लोग विद्यार्थी जीवन से ही उनके जीवन से प्रेरणा लिया करते थे और उन्हीं की प्रेरणा से स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे। यही नहीं जहां तक मैंने सुना है उत्तर प्रदेश जमींदारी एबालीशन कमेटी की जो रिपोर्ट है, वह उन्होंने ही तैयार की थी। हम समझते हैं कि अभी तक उनका उक्त सपना पूरा नहीं हो पाया है। मैं उम्मीद करता हूं कि आगे चलकर यह सदन उनके सपने को पूरा करेगा और पूरे भूमि—सुधार, जैसा वह चाहते थे, उन्हें कार्यान्वित करेगा। इन शब्दों के साथ मैं माननीय नेता सदन और माननीय नेता जनता दल ने जो भावनाएं प्रकट की हैं, उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और मैं निवेदन करता हूं कि हमारी समवेदना उनके शोक सन्तप्त परिवार तक आप पहुंचाने का कष्ट करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री अध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी ने श्री अजित प्रसाद जैन के निधन पर जो समवेदना व्यक्त की है मैं उनसे अपने को और सदन को सम्बद्ध करता हूं। श्री अजित प्रसाद जैन एक उच्च स्तरीय नेता थे। उनके निधन से निश्चय ही बहुत बड़ी कमी, बड़ा अभाव हुआ है। उन्होंने भिन्न-भिन्न पदों पर रह कर हमेशा देश के सम्मान को ऊंचा किया है और सिद्धांत के ऊपर अपने को प्रतिबद्ध रखा है। उनके निधन से जो क्षति हुई है, मैं समझता हूं कि इसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। आपने जो अपेक्षा व्यक्त की है कि दिवंगत आत्मा के शोक संतप्त परिवार को समवेदना आपकी पहुंचा दी जाय, वह पहुंचा दी जायगी। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें और आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप दो मिनट खड़े हो कर इस प्रस्ताव को पारित करें।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

भूतपूर्व सदस्य सर्वश्री विनय कुमार मुकर्जी, सुरेन्द्र बहादुर सिंह, चौधरी लायक सिंह, श्री जयेन्द्र सिंह, श्री मुरलीधर जायसवार तथा श्रीमती राजेन्द्र किशोरी के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

मुझे सदन को यह सूचित करते हुए खेद है कि इस सदन के भूतपूर्व पुराने सदस्य, श्री विनय कुमार मुकर्जी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी श्रमिक नेता हमारे बीच में नहीं रहे। उनका निधन 11 फरवरी, 1977 को सेन्ट्रल कमाण्ड अस्पताल, लखनऊ में हो गया। वह 15 साल तक इस विधान सभा के सदस्य रहे, 1937 से 1952 तक। तदुपरान्त 1952 में वे राज्य सभा के लिये चुन लिए गए। उनका लखनऊ, प्रदेश और सारे देश की ट्रेड यूनियनों से बड़ा गहरा सम्बन्ध रहा। अखिल भारतीय रेलवे संघ, अखिल भारतीय मजदूर संघ, रोडवेज यूनियन, राजकीय प्रेस यूनियन तथा ट्रेड यूनियन कांग्रेस जैसे तमाम संगठनों से उनका आजीवन सम्बन्ध रहा। कई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। वे लखनऊ नगर के अत्यन्त प्रतिष्ठित नागरिक थे। हमारी राजधानी के सामाजिक जीवन में उनका विशेष स्थान था। श्रीमन्, मैं आप से आग्रह करता हूं कि आप श्री मुकर्जी के शोक सन्तप्त परिवार तक हमारी हार्दिक समवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

विगत 17 मार्च, 1977 को विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य जिन्हें लाल साहब सेमरी कहते थे, श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह, जो 75 वर्ष के थे, का निधन हो गया। वह अंग्रेजी शासन काल में आनरेरी मजिस्ट्रेट का पद त्याग कर सक्रिय राजनीति में आ गए और 1937 में विधान सभा के सदस्य चुने गए। 1946 में वे पुनः रायबरेली से निर्वाचित हुए। 1941 और 1942 में स्वतंत्रता संग्राम में आपने जेल यात्रा भी की। कई शिक्षा तथा सामाजिक संस्थाओं से लाल साहब सेमरी का गहरा सम्बन्ध रहा। उनके मधुर व्यक्तित्व से सभी प्रभावित रहे। मेरा आपसे आग्रह है कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी हार्दिकतम समवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

हमारे सदन के भूतपूर्व सदस्य मैनपुरी निवासी चौधरी लायक सिंह भी संसार में नहीं रहे। वे 1957 के सामान्य निर्वाचन में विधान सभा के सदस्य चुन कर आए। चौधरी लायक सिंह का मैनपुरी जिले, और विशेषकर शिकोहाबाद तहसील के विकास में उनका योगदान रहा।

वहां की शिक्षा संस्थाओं से उनका गहरा सम्बन्ध जुड़ा रहा। हाल में अपनी मृत्यु के पहले बटेश्वर में जो डाकुओं का आत्म-समर्पण हुआ उसमें उनका विशेष हाथ रहा। उन

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

की मृत्यु के कुछ दिन पहले उन्होंने इस बात की चेष्टा की कि उस क्षेत्र में शान्ति हो और बटेश्वर के डाकुओं के आत्म समर्पण कराने में पूरा योगदान दिया। मेरा आग्रह है कि उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति इस सदन और हमारे पक्ष की हार्दिक समवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मुझे यह बताते हुए दुख होता है कि महाराजा चरखारी श्री जयेन्द्र सिंह का गत 7 जनवरी, 1977 को निधन हुआ। उनकी अवस्था केवल 48 वर्ष की थी। इसलिए उनका चला जाना और भी अखरता है। वे सन 1967 के सामान्य चुनाव में निर्वाचन क्षेत्र चरखारी जिला हमीरपुर से निर्दलीय सदस्य के रूप में आए और 1968 तक यहां के माननीय सदस्य रहे। उन्होंने विदेश यात्रा की और कई शिक्षा संस्थाओं से उनका सम्बन्ध रहा। ऐसे व्यक्ति आज हमारे मध्य से उठ गए। कृपा करके हमारी और हमारे दल की ओर से प्रकट की गयी समवेदना शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मुझे यह बताते हुए अत्यन्त दुख होता है कि कानपुर के निवासी और इस सदन के भूतपूर्व सम्मानित सदस्य, श्री मुरलीधर जायसवार का गत 9 जनवरी, 1977 को ब्रह्म नगर, कानपुर में निधन हो गया। वे सन 1957 के सामान्य चुनाव में माहुल, जिला आजमगढ़ से निर्वाचित होकर इस सदन में आए और 1962 तक यहां रहे। वह कानपुर शहर की हरिजन कमेटी तथा अखिल भारतीय सन्त शिव नारायण महासमिति के मंत्री तथा यू0पी0 हरिजन लीग एवं अखिल भारतीय जायसवार महासभा के अध्यक्ष रहे। मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की शोक समवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मुझे बड़े दुख के साथ बताना पड़ता है कि इस सदन की भूतपूर्व सम्मानित सदस्या, श्रीमती राजेन्द्र किशोरी का 16 जनवरी, 1977 को निधन हो गया। वह सन 1957 में बस्ती जनपद से चुनकर आयी थीं। उनका स्वभाव मृदुल था और वह बस्ती के विकास में निरन्तर लगी रहीं। उनका विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से गहरा सम्बन्ध रहा। मेरा आग्रह है कि हमारी शोक समवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)---

माननीय अध्यक्ष महोदय आज एक ही दिन हम लोगों को इतने व्यक्तियों को शोक-समवेदनाएं प्रकट करनी पड़ीं, श्री विनय कुमार मुकर्जी, श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह, श्री लायक सिंह, श्री जयेन्द्र सिंह, श्री मुरलीधर जायसवार और श्रीमती राजेन्द्र किशोरी सभी इस प्रदेश में सामाजिक जीवन में और राजनैतिक जीवन में विशेष प्रतिष्ठा रखते हैं। उनका इस प्रदेश के लिए बड़ा योगदान रहा है। मेरी प्रार्थना है उन सभी के परिवार वालों तक मेरी शोक समवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी गढ़वाल)---

माननीय नेता सदन, नेता जनता पार्टी ने दिवंगत सदस्यों के प्रति जो भावनाएं प्रकट की हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और आग्रह करता हूं मेरी शोक समवेदनाएं उनके परिवार वालों तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष---

माननीय नेता सदन, माननीय नेता जनता पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी ने सर्वश्री विनय-कुमार मुकर्जी, सुरेन्द्र बहादुर सिंह, चौधरी लायक सिंह, जयेन्द्र सिंह, मुरलीधर जायसवार और श्रीमती राजेन्द्र किशोरी के निधन पर जो शोकोद्गार के भाव व्यक्त किए हैं, मैं उन से अपने को सम्बद्ध करता हूं। ये सभी इस माननीय सदन के सदस्य थे और इन सबने

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री अध्यक्ष—]

ही सार्वजनिक जीवन में सेवायें की थीं जो अविस्मरणीय रहेंगी। इनके निधन से सार्वजनिक जीवन में रिक्तता आई है। मैं आपके द्वारा व्यक्त समवेदना के सन्देश को शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दूंगा। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे इन दिवंगत आत्माओं को शाश्वत शांति प्रदान करें। अब मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप दो मिनट मौन खड़े होकर शोक प्रकट करें।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

श्री अध्यक्ष—

अब हम उठते हैं और 5 बजे फिर बैठेंगे।

(सदन अपराह्न 1 बजकर 13 मिनट पर अपराह्न 5 बजे तक के लिये स्थगित हुआ।)

(विधान सभा का कार्य सभा मंडप, लखनऊ में अपराह्न 5 बजे श्री अध्यक्ष के सभापतित्व में पुनः आरम्भ हुआ।)

बजट साहित्य के वितरण-व्यवस्था के सम्बन्ध में सूचना

श्री अध्यक्ष —

वित्तीय वर्ष 1977–78 के आय व्ययक संबंधी साहित्य वितरण के लिये निम्नलिखित व्यवस्था की गयी है। महिला सदस्याएं तथा नीचे लिखे जिलों के माननीय सदस्य क्रमशः "हां" तथा "नहीं" सभा कक्ष में अपनी प्रतियां प्राप्त करने का कष्ट करें।

"हां" कक्ष में

महिला सदस्याएं, उत्तर काशी, टिहरी गढ़वाल, चमोली, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, नैनीताल, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बदायूं, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, हरदोई, उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फैजाबाद, बाराबंकी, बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया तथा आजमगढ़ जिले।

"नहीं" कक्ष में

बलिया, गाजीपुर, वाराणसी, जौनपुर, मिर्जापुर, इलाहाबाद फतेहपुर, कानपुर, इटावा, फर्रुखाबाद, बांदा, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, जालौन, मैनपुरी, एटा, आगरा, मथुरा, अलीगढ़, बुलन्दशहर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून जिले तथा श्री ए0 सी0 ग्राइस।

वित्तीय वर्ष 1976–77 के लिए द्वितीय अनुपूरक अनुदान

वित्त राज्य मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह भंडारी)—

मान्यवर, मैं आपकी आज्ञा से वित्तीय वर्ष 1976–77 के द्वितीय अनुपूरक अनुदानों को प्रस्तुत करता हूं।

वित्तीय वर्ष 1977–78 का आय-व्ययक

मुख्य मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से वित्तीय वर्ष 1977–78 का बजट प्रस्तुत करना चाहता हूं।

माननीय सदस्यों की लोक सभा के चुनावों में व्यस्तता के कारण यह सत्र इससे पहले नहीं बुलाया जा सका। यह एक अन्तरिम बजट है जिसके माध्यम से पांच महीने का लेखानुदान प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें व्यय की नई मदें तथा नई योजनाएं सम्मिलित नहीं हैं। अन्तिम बजट नई मदों तथा नई योजनाओं को सम्मिलित करते हुए यथा समय प्रस्तुत किया जाएगा।

परम्परानुसार इस समय केवल वचनबद्ध व्यय के आधार पर वित्तीय विवरण–पत्र तथा श्वेत–पत्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं। बजट अनुमानों के विस्तृत ब्योरे तथा उनसे सम्बन्धित पूर्ण समीक्षा अन्तिम बजट के समय प्रस्तुत किये जायेंगे। परन्तु इस समय प्रस्तुत साहित्य से लेखानुदान के प्रयोजन के लिये माननीय सदस्यों को समस्त आवश्यक सूचना उपलब्ध हो जायेगी।

वर्ष 1977–78 में कुल मिलाकर राजस्व तथा पूंजीगत प्राप्तियां 1489.91 करोड़ रु0 अनुमानित हैं। इसमें 1137.82 करोड़ रु0 की राजस्व प्राप्तियां होंगी जिसमें केन्द्रीय करों में राज्य के अंश के रूप में 289.52 करोड़ रु0 तथा राज्य के निजी करों से 435.95 करोड़ रु0 की अनुमानित प्राप्तियां सम्मिलित हैं। पूंजीगत लेखे के अन्तर्गत 352.09 करोड़ रु0 की कुल प्राप्तियां अनुमानित हैं जिनमें केन्द्र से प्राप्य ऋण भी सम्मिलित हैं।

बजट वर्ष में राजस्व व्यय का अनुमान 1023.42 करोड़ रु0 है। इसमें 139.44 करोड़ रु0 का व्यय आयोजनागत पक्ष में (राज्य आयोजनागत, केन्द्रीय आयोजनागत तथा केन्द्र द्वारा पुरोनिधानित योजनाओं को मिलाकर) तथा 883.98 करोड़ रु0 का व्यय आयोजनेतर पक्ष में होगा।

पूंजी लेखे में 267.09 करोड़ रु0 का व्यय अनुमानित है। इसमें 270.33 करोड़ रु0 आयोजनागत व्यय (राज्य आयोजनागत, केन्द्रीय आयोजनागत तथा केन्द्र द्वारा पुरोनिधानित योजनाओं को मिलाकर) है तथा (–) 3.24 करोड़ रु0 आयोजनेतर व्यय है। इसके अतिरिक्त 206.77 करोड़ रु0 का प्राविधान ऋणों और अग्रिमों के सवितरण के लिये भी है। इस प्रकार कुल राजस्व और पूंजीगत-व्यय 1497.28 करोड़ रु0 अनुमानित है जिसके फलस्वरूप राजस्व और पूंजी लेखे में कुल मिलाकर 7.37 करोड़ रु0 का घाटा अनुमानित है।

लोक लेखे के अन्तर्गत 56.66 करोड़ रु0 की शुद्ध प्राप्ति अनुमानित है। इसे हिसाब में लेकर अगले वर्ष के समस्त लेन–देनों में 49.29 करोड़ रु0 की शुद्ध बचत होने का अनुमान है जिसके फलस्वरूप बजट वर्ष का 115.20 करोड़ रु0 का अनुमानित प्रारम्भिक घाटा वर्ष के अन्त में घटकर 65.91 करोड़ रु0 रह जाने का अनुमान है। परन्तु जैसा मैं निवेदन कर चुका हूं यह अन्तरिम बजट है। सम्पूर्ण रूप से स्थिति अन्तिम बजट के समय ज्ञात होगी। उस समय घाटे के पूर्ति के विषय में भी आवश्यकतानुसार चर्चा की जायेगी।

यह उल्लेखनीय है कि चालू वित्तीय वर्ष के 540 करोड़ रु0 के राज्य आयोजनागत मूल परिव्यय के विपरीत, योजना आयोग ने आगामी वित्तीय वर्ष की राज्य आयोजना का परिव्यय 648.25 करोड़ रु0 निर्धारित किया है। उसके अलावा पर्वतीय क्षेत्र के लिये 27 करोड़ रु0 का अतिरिक्त आवंटन किया गया है। कुल मिला कर पर्वतीय क्षेत्र की योजना लगभग 56 करोड़ रु0 की होगी। इस प्रकार राज्य आयोजना पर अगले वर्ष कुल 675.25 करोड़ रु0 का व्यय अनुमानित है, जिसमें से लगभग 95.77 करोड़ रु0 के सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा जुटाये गए संसाधनों से वहन किये जायेंगे। इस आधार पर राज्य बजट में केवल 579.48 करोड़ रु0 का व्यय प्रदर्शित किया जाना है जिसके समक्ष प्रस्तुत अन्तरिम अनुमानों में फिलहाल 570.20 करोड़ रु0 ही सम्मिलित हैं। नई योजनाओं के लिये आवश्यक प्राविधान बाद में प्रस्तुत होने वाले अन्तिम बजट में किया जायेगा।

जैसा मैंने निवेदन किया है, लेखानुदान के प्रयोजन के लिये किसी विस्तृत समीक्षा की आवश्यतता नहीं है और मैं इस अवसर पर सदन का अधिक समय नहीं लूंगा। मुझे आशा है कि सदन इस अंतरिम बजट पर स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करेगा।

महोदय, मैं 1977–78 का बजट प्रस्तुत करता हूं।

वित्तीय वर्ष 1977–78 के एक भाग के लिए लेखानुदान

मुख्य मंत्री (श्री नारायणदत्त तिवारी)—

श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से वित्तीय वर्ष 1977–78 के एक भाग के लिये लेखानुदान प्रस्तुत करता हूं।

श्री अध्यक्ष—

अब हम उठते हैं, कल 11 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 5 बजकर 8 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

लखनऊ :
25 मार्च, 1977।

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

नत्थी 'क'

(देखिए पीछे पृष्ठ 5 पर।)

श्री राज्यपाल द्वारा दिनांक 25 मार्च, 1977 को दिया गया अभिभाषण

माननीय सदस्यगण,

आज आप हमारे आदरणीय राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद के दुखद निधन से हुई महान क्षति के बाद पहिली बार एकत्रित हो रहे हैं। फखरुद्दीन अली अहमद साहब एक सच्चे देशभक्त थे, और वास्तव में वह हमारी मिश्रित संस्कृति एवं धार्मिक सहिष्णुता व धर्मनिरपेक्षता के आदर्शों के प्रतीक थे। मैं उनकी स्मृति के प्रति अपनी सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

हाल ही में हुए लोक सभा के सामान्य निर्वाचन के कारण सरकार को आगामी वित्तीय वर्ष के बजट के प्रस्तावों को अन्तिम रूप देने के लिये पर्याप्त समय नहीं मिल पाया है। अतएव, इस अल्पकालीन सत्र में मुख्य रूप से अत्यन्त आवश्यक वित्तीय कार्य ही सम्पादित किया जायगा। आप से चालू वित्तीय वर्ष की द्वितीय अनुपूरक मांगों तथा आगामी वित्तीय वर्ष के एक भाग के लिये लेखानुदान को पारित करने की अपेक्षा की जायेगी।

मुझे हर्ष है कि राज्य सरकार ने योजना आयोग से विकास पर होने वाले परिव्यय को आगामी वित्तीय वर्ष के लिये लगभग 675 करोड़ रुपये स्वीकार कराने में सफलता प्राप्त की है, जबकि चालू वित्तीय वर्ष में यह धनराशि केवल 540 करोड़ रुपये थी। सिंचाई, कृषि एवं विद्युत् को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है, क्योंकि यही राज्य की अर्थ व्यवस्था के आधार हैं। सिंचाई, कृषि एवं विद्युत् के विकास पर 488 करोड़ रुपये का परिव्यय होगा। बाढ़ नियंत्रण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अट्ठारह लाख हैक्टेयर से अधिक फैले हुए बाढ़ग्रस्त क्षेत्र को वर्ष 1980 तक राहत पहुंचाने के उद्देश्य से, बाढ़ नियंत्रण बोर्ड के अनुदेशों के अनुसार, 300 करोड़ रुपये की लागत का एक मास्टर प्लान तैयार किया गया है। विद्युत् के विकास पर सरकार द्वारा विशेष बल दिये जाने के फलस्वरूप राज्य की अध्यापित क्षमता, जो चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्त तक केवल 1674 मेगावाट थी, वर्तमान वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक 2500 मेगावाट हो जायेगी और 31 मार्च, 1978 तक बढ़ कर 3010 मेगावाट हो जायेगी। मुझे आशा है कि नवगठित केन्द्रीय सरकर उत्तर प्रदेश के विकास के लिए पूर्ववत् सहायता की गति को बनाये रखेगी व वरीयता देगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि नयी केन्द्रीय सरकार प्रादेशिक सरकार से भिन्न राजनैतिक विचारधारा की होते हुए भी इस सरकार से सहयोग करेगी। मेरी सरकार भी तदनुकूल अपने दायित्वों के परिपालन हेतु पूर्ववत् सचेष्ट रहेगी।

मेरी सरकार का ध्यान बराबर किसानों के हित की रक्षा की ओर रहा है। उसी नीति के अनुसरण में हाल में मेरी सरकार ने सभी सीरदारों को बिना दस गुना लगान जमा किये भूमिधरी के अधिकार प्रदान किये हैं। इस क्रान्तिकारी कदम के फलस्वरूप 75 लाख खातों के अन्तर्गत एक करोड़ किसान परिवारों को लाभ पहुंचा है।

बढ़े हुए लगान को आधा करने के लिये एक अध्यादेश हाल में जारी किया गया। फिर भी सरकार यह महसूस करती है कि किसानों पर लगान के बोझ को और कम किया जाय। इस हेतु मेरी सरकार ने एक उच्च स्तरीय समिति का गठन करने का निश्चय किया है। यह समिति अपनी रिपोर्ट शीघ्रातिशीघ्र देगी।

मेरी सरकार की जानकारी में यह बात आई है कि बिजली के उत्पादन व सिंचाई क्षमता में उत्तरोत्तर वृद्धि के बावजूद किसानों की बढ़ती हुई आवश्यकतायें हीं पूरी

हो रही हैं। अतएव इनकी क्षमता को और अधिक बढ़ाने, वितरण प्रणाली में सुधार व बिजली व पानी की दरों से सम्बन्धित नीतियों पर पुनर्विचार की आवश्यकता सरकार महसूस करती है। उपरोक्त समिति से इस बारे में भी शीघ्रातिशीघ्र सुझाव देने के लिये कहा जायेगा।

शासन ने यह भी निश्चय किया है कि आपके समक्ष एक विस्तृत "राजस्व संहिता" (रेवेन्यू कोड) को प्रस्तुत किया जाय, जिसमें वर्तमान सभी भूमि विधियों का संहत और सरल रूप में समावेश किया जायगा। आशा है कि इसके फलस्वरूप किसान अपने अधिकारों को सुस्पष्ट रूप से समझ सकेंगे तथा शोषण से अपने को बचा सकेंगे।

एक अन्य अध्यादेश भूमिहीन खेतिहर मजदूरों, ग्रामीण शिल्पकारों तथा छोटे किसानों और शहरी मजदूरों को कर्ज के भार से मुक्ति की व्यवस्था करने के लिए प्रख्यापित किया गया था। आपसे इस अध्यादेश के स्थान पर विधेयक पारित करने की अपेक्षा की जायगी। समाज के निर्बल वर्गों की दशा में सुधार करने के लिए किए गए सरकार के निश्चय की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। ग्राम समाज की लगभग 15 लाख एकड़ भूमि तथा एक लाख एकड़ सीलिंग की अतिरिक्त भूमि को 18 लाख 33 हजार भूमिहीनों में वितरित किया जा चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों में निर्बल वर्ग के 12 लाख से अधिक परिवारों को आवास स्थलों का आबंटन किया जा चुका है। इस वर्ष 17 हजार आवास स्थलों को विकसित किया जा चुका है तथा 50 हजार से अधिक आवास स्थलों को आगामी वित्तीय वर्ष में विकसित करने का प्रस्ताव है।

नवीन उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहित करने और वर्तमान उद्योगों को सुदृढ़ करने के लिए शासन द्वारा निरन्तर कार्यवाही की जायगी। कुछ और नई चीनी मिलें स्थापित की जायेंगी और पुरानी मिलों का आधुनिकीकरण और नवीनीकरण किया जायगा। उपक्रमियों को वित्तीय तथा अन्य सहायता देने हेतु कई निगम स्थापित किए गए हैं। बुनकरों की सहायता के लिए सरकार विशेष चेष्टा करेगी तथा गोरखपुर-बस्ती प्रोजेक्ट की तरह नए प्रोजेक्ट चालू कराने का प्रयास होगा।

उद्योगों में श्रमिकों की साझेदारी की योजना मेरी सरकार की नीति रही है। उसके कार्यान्वयन में और अधिक विस्तार किया जायगा। मजदूरों के हितों की रक्षा करते हुए सौहार्द के वातावरण में उत्पादन को बढ़ाने के लिए सरकार आगे भी प्रयत्नशील रहेगी।

मेरी सरकार ने अपने कर्मचारियों तथा स्थानीय निकायों के कर्मचारियों को भी कई सुविधाएं हाल में दी हैं। राज्य कर्मचारियों को अब केन्द्रीय कर्मचारियों के बराबर महंगाई भत्ता दिया जा रहा है।

शिक्षा का स्तर उठाने के उद्देश्य से सरकार ने भारत सरकार द्वारा संस्तुत 10 जमा 2 का फार्मूला मान लिया है। परीक्षा प्रणाली में सुधार, पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण करने तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण में सुधार लाने के उद्देश्य से सरकार ने राज्य स्तर पर एक शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण बोर्ड की स्थापना करने का निश्चय किया है। योग्य शिक्षकों का उत्तम चुनाव करने के उद्देश्य से सरकार ने एक विश्वविद्यालय सेवा आयोग की स्थापना करने का निश्चय किया है। सरकार ने सभी विश्वविद्यालयों के लिए स्नातक स्तर पर एक सामान्य पाठ्यक्रम लागू करने का भी निश्चय किया है।

शिक्षकों के कल्याण के लिए व उनका जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। प्राइमरी स्तर से माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को राजकीय अधिकारियों के समतुल्य पेंशन देने का निर्णय लिया गया है। फलस्वरूप उन्हें साठ रुपए तथा पचहत्तर रुपए के स्थान पर चार सौ रुपए तक पेंशन देय हो जाएगी। अशासकीय जूनियर हाई स्कूलों के अध्यापकों का सम्पूर्ण वेतन शासन द्वारा वितरित किया जाएगा। अध्यापकों को स्थानीय निकायों के कर्मचारियों की भांति बड़े नगरों में मकान किराया

भत्ता दिया जाएगा। प्राथमिक शिक्षकों को चिकित्सीय अवकाश देने की व्यवस्था की गयी है। शासकीय डिग्री कालेजों के अध्यापकों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संस्तुत वेतनमान देने का निर्णय लिया गया है। अगले वित्तीय वर्ष में दस हजार बी0टी0 सी0 उत्तीर्ण अध्यापक नियुक्त करने का निर्णय लिया गया है।

मेरी सरकार की यह घोषित नीति है कि उर्दू को बढ़ावा देने के लिए निरन्तर सक्रिय कदम उठाए जायं। प्रदेशीय उर्दू एकेडमी को सुदृढ़ किया जा रहा है जिससे उर्दू साहित्य का समुचित विकास हो सके।

अल्पसंख्यक समुदाय के शिक्षा, संस्कृति तथा भाषा सम्बन्धी अधिकारों को पूर्णतया सुरक्षित रखा जाएगा। पिछड़े वर्ग को शिक्षा क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए पिछड़े वर्ग की छात्र-वृत्तियों की संख्या दुगुनी कर दी गयी है।

अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन-जातियों के सदस्यों का जीवन स्तर ऊंचा करने के लिए उत्तरोत्तर कार्यक्रम अपनाए जा रहे हैं। पक्के आवास गृह तथा पेयजल आदि की सुविधा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सरकारी सेवाओं तथा सार्वजनिक उपक्रमों में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन-जातियों के लिए आरक्षित स्थानों पर नियुक्तियां सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कार्यवाही की जा रही है।

उत्तर प्रदेश की प्राचीन परम्पराओं के अनुरूप हाल में प्रयाग का कुम्भ मेला अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ जिसने दूर-दूर के राज्यों और विदेशों तक से अभूतपूर्व संख्या में यात्रियों को आकर्षित किया। इसके प्रबन्ध से एवं उपलब्ध की गई विभिन्न सेवाओं से सम्बद्ध समस्त लोक सेवक बधाई के पात्र हैं।

माननीय सदस्यगण, मुझे विश्वास है कि अपने विचार विमर्श में आप इस महान् प्रदेश की तथा इस विधान मण्डल की परम्पराओं के अनुसार सौहार्द, सहनशीलता एवं पार परिक आदर की भावना को दिग्दर्शित करते रहेंगे। इन शब्दों के साथ मैं आपको अपने कर्तव्यों का सच्ची प्रजातांत्रिक भावना के साथ निर्वहन करने का आवह्वान करता हूं।

जयहिन्द।

पी0एस0यू0पी0—एल0 1 वि0सभा—(1)—5-4-1977-840-(ब्रा0प्रेस)।